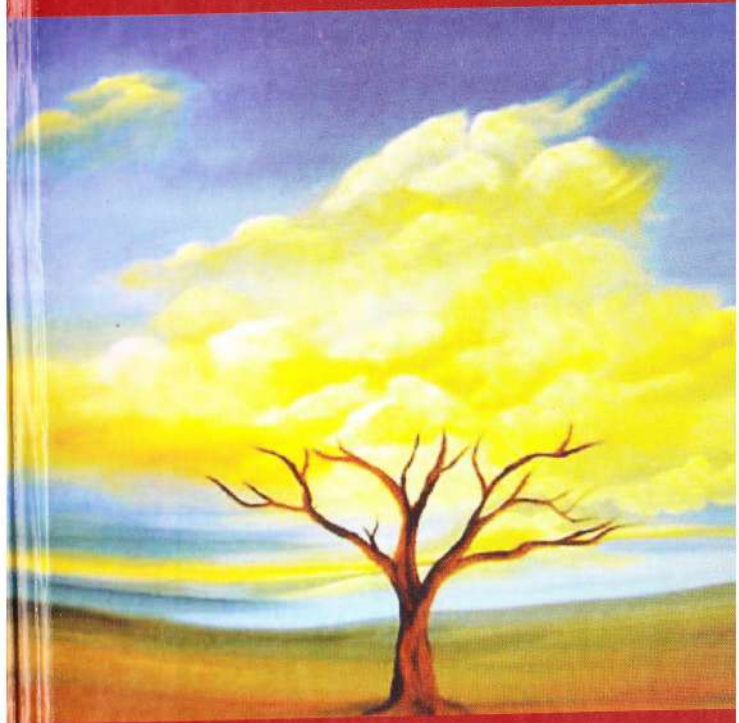


भक्तिकाल

वाणी और विचार



सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र यादव

अवधेश कुमार

प्रकाशक
विजया बुक्स
1/10753, गली नं. 3, सुभाष पार्क,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 9910189445
Email : vijyabooks@gmail.com

© सम्पादक

प्रथम संस्करण : 2017

ISBN : 978-93-81480-87-8

मूल्य : 695/-

मुद्रक
विकास कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032

हिन्दी साहित्य और भारतीय संस्कृति में
गहरी रुचि रखने वाले
डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर (म.प्र.)
के संवेदनशील कुलपति
प्रोफेसर राघवेंद्र पी. तिवारी जी की
साहित्यिक मानवीयता को
सादर!

कबीर का समन्वयवाद

आशुतोष

कबीर एक ऐसे भक्त कवि हैं जिनके साहित्य से पाठकों, रचनाकारों और आलोचकों को सर्वाधिक उम्मीद है। कबीर की कविता मनुष्य और उसके समाज के लिए एक उपलब्धि की तरह है। समय के साथ कबीर की कविता की बढ़ती जा रही प्रासंगिकता इस बात की तस्दीक करती चलती है। जब तक इस नश्वर संसार में मुक्ति की दरकार रहेगी तब तक कबीर और उनकी कविताई की प्रासंगिकता बनी रहेगी। कबीर एक ऐसे रचनाकार हैं जिनके पास हम अपने जीवन-जगत के बहुत सारे सवालों के साथ जाते हैं और एक मुकम्मल उत्तर की माँग करते हैं। कबीर हमें कभी निराश भी नहीं करते। उस पर उनकी ठसक ऐसी कि 'हमन है इश्क मस्ताना, हमें दुनिया से यारी क्या'। लेकिन दुनिया को कबीर की यारी पसन्द है। एक बेहतर कल के लिए, समतामूलक समाज की रचना के लिए, प्रत्येक प्रकार की भेद-दृष्टियों से मुक्ति के लिए।

कबीर की कविता पर कई दृष्टियों से विचार किया गया है। कबीर का काव्य असिमित संभावनाओं का काव्य है। इसलिए बार-बार उसके अध्ययन-विश्लेषण की जरूरत पड़ती रहती है। ऐसा ही एक प्रश्न है कि क्या कबीर समन्वयवादी थे? यदि कबीर समन्वयवादी थे तो उनके और तुलसी के समन्वयवाद में क्या कोई तात्विक अंतर है? यहाँ कबीर के साहित्य से इन्हीं कुछ प्रश्नों के उत्तर पाने की कोशिश की जा रही है।

समन्वय से तात्पर्य दो या उससे अधिक विभिन्न बातों के बीच एक ऐसी समानता का प्रतिपादन करना होता है, जिसके कारण उनमें पारस्परिक विरोध का अभाव सूचित होने लगे और वास्तविक एकता सिद्ध की जा सके। कबीर के धार्मिक और दार्शनिक विश्वासों, साहित्यिक और सामाजिक मान्यताओं के अध्ययन-विश्लेषण से एक प्रश्न उठता है कि क्या वे समन्वयवादी थे? इस प्रश्न का समाधान खोजने के लिए कबीर के विश्वासों और विचारों के संधि-स्थल को देखना होगा।

कबीर के आविर्भाव में तीन मुख्य दार्शनिक और धार्मिक प्रवृत्तियों का हाथ था। प्रथमतः उन पर सिद्ध और योगधारा का प्रभाव था। दूसरे इस्लाम और सूफी मत का और तीसरे तत्कालीन भक्ति सम्प्रदायों का। इन तीनों के फलस्वरूप कबीर के काव्य में एक नवीन विचार एवं भाव-धारा लक्षित की जा सकती है।

कबीर को कोई दार्शनिक शिक्षा नहीं मिली थी। उन्हें किसी धार्मिक महापुरुष की ओर से कोई सुव्यवस्थित सुझाव भी नहीं मिला था। प्रसिद्ध है कि वे निरक्षर भी थे। इस कारण उनके लिए किन्हीं मान्य ग्रन्थों का अध्ययन एवं मनन करने कुछ निश्चय करना भी कठिन था। ऐसा अनुमान किया जाता है कि अपने समय की परिस्थिति तथा सम्यक् निरीक्षण तथा पहचान की उनमें विशेष योग्यता थी और उससे निकाले गये निष्कर्षों को सत्संग एवं आत्मचिन्तन की कसौटी पर परखने में भी वे अत्यंत कुशल थे। फिर भी उन पर विभिन्न विचारधाराओं का प्रभाव स्पष्ट दिखता है। वे अनेक धार्मिक और दार्शनिक विचारों को आत्मसात करते चलते हैं।

कबीर की ईश्वर की सम्बन्धी विचारों में भी बड़ी भिन्नता देखने को मिलती है। उनकी रचनाओं में निर्गुण निराकार अथवा शून्यतत्व की उपस्थिति प्रकट है। स्पष्ट है कि शून्य की यह भावना नागार्जुन के 'अनिर्वचनीयतावाद' से सिद्धों में 'महासुख' (ईश्वरत्व) के रूप में होती हुई नाथपंथियों में आई थी। नाथपंथी योगियों का कबीर के समय में बहुत अधिक प्रभाव था। कबीर के यहाँ निर्गुण निराकार अथवा शून्यतत्व नाथपंथियों के प्रभाव से आया है। दूसरी ओर उनकी रचनाओं में एकेश्वरवाद भी अपने पूरे वैभव के साथ उपलब्ध है। कबीर का पालन-पोषण मुसलमान परिवार में हुआ था इसलिए एकेश्वरवादी इस्लाम का प्रभाव उन पर पड़ा। तीसरी ओर जिस विचारधारा का सबसे अधिक प्रभाव कबीर पर दिखता है वह है अद्वैतवाद। जिसके अनुसार जीव और प्रकृति की सत्ता गौण है तथा ब्रह्म सर्वव्यापक है। अद्वैतवाद का प्रभाव उनके काव्य में सर्वत्र मिलता है। इन तीन विचारधाराओं के दिग्दर्शन से यह विचार उठना स्वभाविक है कि क्या कबीर ने अपने पूर्ववर्ती और समकालीन सभी दार्शनिक मतों का समाहार करके एक सहज सिद्धान्त का निरूपण किया जिससे कि आपसी मतभेद दूर हो सके? यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि इन दार्शनिक मतों के अतिरिक्त भी ईश्वर की कृपा को प्राप्त करने के अन्य उपाय उनकी रचनाओं में मिलते हैं।

ईश्वर अर्थात् परमतत्व से साक्षात्कार के लिए उन्होंने अनेक बार योग और समाधि की बातें कही हैं। ब्रह्मरन्ध्र, इड़ा, पिंगला, सुषुम्ना आदि योगपरक शब्द अनेक बार उनकी साखियों और पदों में आए हैं। अनेक बार उन्होंने आकाश स्थित कूप में पानी पीने की बात कही है। नाथपंथियों के हठयोग के प्रभावस्वरूप कबीर

आशुतोष